विज्ञान प्रकाश वर्ष : 23, अंक 2, अप्रैल–जून 2025 ISSN : 1549-523-X

भारतीय दृष्टि से प्रकाश शब्द का समन्वय

प्रकाश शब्द में मुख्यतः दो पद हैं, 'प्र' एवं 'काश'। इसका प्रायः दो अर्थों में प्रयोग होता है - १. प्रकाशित होने वाला, एवं २. प्रकाशित करने वाला। इसके अतिरिक्त प्रकाश शब्द आभा, कान्ति, दीप्ति, एवं उज्ज्वलता आदि अर्थों में भी प्रयुक्त होता है। प्रकाश, जिसके द्वारा सब कुछ प्रकाशित होता है, इस सन्दर्भ में श्रुति कहती है -

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

अर्थात् उसी के प्रकाशमान होने के कारण सब कुछ प्रकाशित होता है, उसी के प्रकाश से सब कुछ प्रकाशमान है। प्रकाश का यह स्वरूप उसकी परम सत्तात्मकता का उपस्थापन करता है, किन्तु यथार्थ यह है कि सभी चर-अचर पदार्थों के प्रकाश का कारण नित्य प्रकाशमान परम सत्ता है। इसके लिए श्रुति में वर्णित ब्रह्म के स्वरूप को देखा जा सकता है -

यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते।

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।

यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्।

यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते।

अर्थात् जो वाणी से अनभिव्यक्त है, किन्तु वाणी उसी से सञ्चालित है। जो मन से नहीं समझा जा सकता, किन्तु मन उसी से सञ्चालित है। जो नेत्रों के द्वारा नहीं देखा जा सकता, परन्तु नेत्र उसी से सञ्चालित होकर सुनते हैं। उपर्युक्त ब्रह्म का स्वरूप इस बात की ओर संकेत करता है कि प्रकाश का असीम, अनन्त एवं अनाहत स्रोत परम सत्ता ही है। उसी से समस्त चराचर जगत् प्रकाशमान, स्पन्दायमान और चेतनावान है। वही परम प्रकाश है। उस परम प्रकाश को भारतीय चिन्तन में शिव और शक्ति के सामरस्य के रूप में देखा गया है। शिव और शक्ति का यह सामरस्य प्रकाश और विमर्श के रूप में भी परिभाषित है।

प्रकाश शिव स्वरूप आत्माभिव्यक्ति है। वह चैतन्य है, जिसके द्वारा सब कुछ प्रकाशित होता है। विमर्श चेतना का बोध है, ज्ञान है। उसे आत्मसंवित्ति (आत्मज्ञान) भी कहा जाता है। वस्तुतः विमर्श से ही प्रकाशस्वरूप शिव जगत् की सृष्टि, स्थिति और संहार जैसे कार्यों का सम्पादन करते हैं। इसी विमर्श के माध्यम से चित्/चैतन्य स्वयं को चिद्रूपिणी शक्ति के रूप में अनुभव करता है। चिन्मात्र प्रकाशस्वरूप शिव चित्शक्तिसंयुक्त विमर्श स्वरूप भी हैं। इस प्रकार परम सत्ता के रूप में प्रकाश विमर्शसंयुक्त है, क्योंकि यदि विमर्शरहित प्रकाश होगा तो वह जड़ ही होगा। उस प्रकाश में आत्मबोध का सामर्थ्य नहीं होगा। जैसे - हीरे का प्रकाश अन्य वस्तुओं को प्रकाशित करता है, परन्तु वह स्वयं ईक्षण नहीं कर सकता और न ही उसे स्वयं के प्रकाश का ही बोध होता है, इसीलिए जब प्रकाश आत्मबोध संयुक्त होकर स्वयं का अहंरूपेण अनुचिन्तन अर्थात् विमर्श करता है, तभी आनन्द, उल्लास, स्पन्द आदि भावों से युक्त विश्वमयी क्रीडा करता है, जिसमें शिव अपनी स्वयं की भित्ति पर ही चित्रकार की भाँति विश्वरूपी चित्र का उन्मीलन करते हैं, अर्थात् प्रकाश की भित्ति पर ही प्रकशित विश्व का उन्मीलन करते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि विमर्श अथवा चितिशक्ति के कारण मूल प्रकाश (शिव) में आत्मबोध होता है। साथ ही, चराचर जगत् में भी, सीमित ही सही, किन्तु चेतना रूप प्रकाश एवं बोध रूप विमर्श की सत्ता ही प्रतिबिम्बित होती है।

प्रकाश का स्वरूप आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में 'अन्धकार को दूर करने वाले' अर्थ में सामान्यतः प्रयुक्त होता है, जिसके अन्तर्गत विद्युत, ऊर्जा, तरङ्ग, चमक, जगमगाहट आदि भिन्न-भिन्न प्रकार्यात्मक शब्दप्रयोग उसके जड़ता-प्रधान स्वरूप को प्रकाशित करते हैं। एक ऐसा प्रकाश जो वस्तुमात्र प्रतीत होता है, परन्तु भारतीय परम्परा में प्रकाश अहंप्रत्यवमर्शात्मक (अपने स्वरूप का ज्ञान) चैतन्य स्वरूप, सर्वव्यापक, सम्पूर्ण सत्य से अन्वित परम सत्ता के रूप में परिभाषित है, जो आध्यात्मिक, अधिभौतिक एवं आधिदैविक जैसी प्रत्येक सृष्टि में चैतन्यस्वरूप है। जिस प्रकार विज्ञान भारतीय दृष्टि में विविध प्रकार का ज्ञान है, नानाभावापन्न मृत्युभावात्मक है, उसी प्रकार प्रकाश अमृत भावात्मक एकानुबन्धी ज्ञान है, पूर्ण चैतन्य है एवं विज्ञान के सापेक्ष समस्त प्रकार की व्यष्टियों अथवा संकोचों से मुक्त कर देने वाली संविद्विश्रान्ति (परम चेतना में विश्रान्ति) से युक्त है। यही भारतीय विचार में विज्ञान शब्द एवं तत्सम्बन्धी प्रकाश का समन्वय माना जा सकता है।